Concern over accidents caused by Navigation error of Google Map application

डा. अजित माधवराव गोपछड़े (महाराष्ट्र): माननीय उपसभापति महोदय, भारत में गूगल मैप के गलत होने के कारण होने वाली दुर्घटनाएं एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। भारत के केरल में हाल ही में दो 29 वर्षीय डॉक्टरों की दुखद मौत हुई, जब उनकी कार गूगल मैप्स द्वारा सुझाए गए रास्ते पर चलते हुए पेरियार नदी में गिर गई। यह घटना इस बात का एक और उदाहरण है कि कैसे तकनीकी उपकरणों पर अत्यधिक निर्भरता कभी-कभी खतरनाक परिणाम दे सकती है। उत्तर प्रदेश के बरेली में एक शादी में जा रहे तीन लोग भी इसी तरह की एक घटना का शिकार हुए। वे गूगल मैप्स के निर्देशों का पालन कर रहे थे, जब उनकी कार एक नदी में गिर गई। यह घटना इस को दर्शाती है कि गूगल मैप्स की जानकारी हमेशा सही नहीं होती है और कभी-कभी यह गलत दिशा में ले जा सकता है। बिहार का एक परिवार भी गूगल मैप्स के माध्यम से गोवा का रास्ता पूछने के बाद अंततः कर्नाटक के जंगल में पहुंच गया। यह घटना इस बात का प्रमाण है कि कभी-कभी गूगल मैप्स की जानकारी भ्रामक हो सकती है, आईटी अधिनियम की धारा 43-ए में यह प्रावधान है कि सभी संस्थाओं को अपने उपयोगकर्ताओं के डेटा की सुरक्षा और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए उचित उपाय करने की आवश्यकता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्तिगत और संवेदनशील डेटा को सुरक्षित रखा जाए और किसी भी प्रकार की अनधिकृत पहुंच या डेटा के दुरुपयोग से बचा जाए। यदि किसी संस्था, जैसे कि गूगल मैप्स के पास तकनीकी क्षमता है, लेकिन वह जान-बूझकर या लापरवाही से डेटा की सटीकता और सुरक्षा को बनाए रखने में असफल रहती है, तो उसे कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। गूगल मानचित्र विश्व स्तर पर नेविगेशन का एक प्रमुख साधन है। भारतीय स्टार्ट-अप्स और कंपनियाँ वर्तमान में तेजी से विकास कर रही हैं। यदि ये स्टार्ट-अप्स और कंपनियाँ भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और अन्य संबंधित संस्थाओं के साथ सहयोग करें, तो उन्हें अत्याधुनिक तकनीक और एक व्यापक डेटाबेस प्राप्त होगा। इससे भारत में एक ऐसा प्लेटफॉर्म विकसित हो सकता है, जो गूगल मैप्स जैसी वैश्विक सेवाओं पर निर्भरता को कम करेगा। भारतीय कंपनियों के पास अपने देश के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए मानचित्र और डेटा होंगे, जो स्थानीय जरूरतों और संदर्भों के अनुसार अनुकूलित होंगे। भारत में गलत गूगल मैप के कारण होने वाली दुर्घटनाएं एक गंभीर समस्या बनती जा रही है। तकनीकी विकास के साथ, लोग अपने स्मार्टफोन्स पर गूगल मैप्स का उपयोग करके यात्रा करने लगे हैं। हालांकि, कभी-कभी गूगल मैप्स में गलत जानकारी या गलत दिशा-निर्देशों के कारण दुर्घटनाएं हो सकती हैं। भारत सरकार के इन सभी मुद्दों पर गंभीरता से विचार करके ठोस कदम उठाने चाहिए। मैं भारत सरकार से यह विनती करता हूं कि हमारा जो भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और हमारे जो बहुत सारे तरुण भाई, बहन हैं, वे अपने स्टार्ट-अप्स के माध्यम से एक अत्याधुनिक तकनीक और एक व्यापक डेटाबेस के माध्यम से गूगल मैप्स जैसी चीज़ें अपना सकते हैं। ...(**समय की घंटी**)... उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the issue raised by the hon. Member, Dr. Ajeet Madhavrao Gopchade: Shri Chunnilal Garasiya (Rajasthan), Shri S. Selvaganabathy (Puducherry), Shri Maharaja Sanajaoba Leishemba (Manipur), Dr. Anil Sukhdeorao Bonde (Maharashtra), Shri Banshilal Gurjar (Madhya Pradesh), and Shrimati Geeta *alias* Chandraprabha.

श्री उपसभापतिः माननीय श्री मानस रंजन मंगराज, Concern over High Rate of Inflation in India; Not present.

माननीय श्री राघव चड्ढा, 'Concern over Devaluation of Indian Rupee.' माननीय श्री राघव चड्ढा, not present. माननीय श्री नरेश बंसल जी, 'Demand for Declaration of Shaheed Raja Vijay Singh Memorial, Kunja-Bahadurpur, Uttarakhand as a monument of national importance.'

Demand for declaration of Shaheed Raja Vijay Singh Memorial, Kunja-Bahadurpur, Uttrakhand as a monument of national importance

श्री नरेश बंसल (उत्तराखंड): उत्तराखंड के हरिद्वार जिले में कुंजा बहादुरपुर ऐसा स्थान है, जहां पर 1857 की क्रांति से भी तीन दशक पूर्व क्रांति हुई। वहां के राजा विजय बहादुर सिंह और उनके सेनापति कल्याण सिंह ने एक हज़ार युवकों की सेना को इकट्ठा करके अंग्रेजों के साथ लोहा लिया, उनकी मालगुजारी बंद की, उनका खजाना लूटा और सब प्रकार से ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। फलस्वरूप अंग्रेजों ने कुंजा बहादुरपुर गांव पर अत्याचार किए, क्योंकि उस समय के राजा विजय बहादुर सिंह का साम्राज्य मेरठ, मुजफ्फरनगर, बिजनौर, कुमाऊं, गढ़वाल, सहारनपुर तक फैला हुआ था। उन्होंने साहस का परिचय दिया और जब अंग्रेजों ने आक्रमण किया, तो 40 ब्रिटिश सैनिक भी मारे गए, हमारे सैकड़ों नौजवान मारे गए और अत्याचार भी हुआ। गांव में केवल गर्भवती महिलाएं ही बची थीं, शेष सभी पुरुषों को मार दिया गया। वहां दहशत पैदा करने के लिए सबको पेड़ों पर लटकाया गया। दो सैनिकों को देहरादून जेल के सामने पेड़ पर लटकाया गया। सैकड़ों वीर गुर्जरों ने अपना बलिदान दिया। किले पर कब्जा करके अंग्रेजों ने कत्लेआम मचाया। मैं सोचता हूं कि आज जो हमें मानवाधिकार का पाठ पढ़ा रहे हैं, उनका इतिहास तो क्रूर अत्याचारों से भरा पड़ा है। यह विडम्बना है कि हमारे इतिहास में कुंजापुर, बहादुरपुर जैसी अनेक शौर्य गाथाओं को भुला दिया गया। इन वीरों के शौर्य के बिना हमारा इतिहास अधूरा है और बहुत सीमित है। वास्तव में हम विदेशियों द्वारा लिखित विदेशी दृष्टि से लिखे गए इतिहास को ही पढ़ रहे हैं, जिसमें भारतीयों की मेधा, प्रतिभा, शौर्य और वीरता को गौण कर दिया गया। देश के इतिहास में राष्ट्र के विभिन्न प्रांतों और भागों में ऐसे अनेक संदर्भ हुए, जिनमें स्थानीय जनता ने स्थानीय नायक के नेतृत्व में आततायी आक्रांताओं से अपनी आजादी, अपनी अस्मिता, संस्कृति और संपत्ति को बचाया। दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्रों में ऐसे अनेक विद्रोह